राजस्थानी व पहाड़ी शैली में चित्रित गीत-गोविन्द में वस्त्राभूषण वैविध्य

बीना जैन एवं हीरालाल कुम्हार

आदिकाल से मानव ने अपनी आन्तरिक भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिये कला को माध्यम बनाया और शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये तथा उसे सौन्दर्यात्मक रूप प्रदान करने के लिये भी वस्त्रालंकरण के रूप में कला को माध्यम बनाया। सभ्यता के प्रारम्भिक चरण में आदिकालमें मानव नग्न अवस्था में रहता था, लेकिन कालान्तर में उसने पेड़ों के पत्तें, छाल एवं पशुओं की खाल से शरीर को ढकना शुरू कर दिया। वैदिक काल में वस्त्रकला पर्याप्त उन्नति कर चुकी थी। नारी प्रायः ओढ़नी पहनती थी। इन पर कढ़ाई का काम होता था। वस्त्र रंगीन होते थे। धनिक वर्ग की नारियों के वस्त्रों पर सुनहरी धागे से काम होता था। नारियाँ अपने वक्ष-स्थल पर चोली का प्रयोग करती थी। वस्त्र को विशेष रूप से इस तरह से पहना जाता था, कि सामने के भाग में चुन्नटे पड़ जाती थी, जो मनोहर प्रतीत होती थी। नारी और पुरुष दोनों ही उत्तरीय (चोला) वस्त्रों का प्रयोग करते थे। पद और व्यवस्था के आधार पर भी वस्त्र आधारित थे तथा शीत, उष्ण और शीतोष्ण प्रदेश होने के कारण अलग-अलग स्थानों में अतिप्राचीन काल से आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र पहने जाते थे। साहित्य, चित्र और मूर्तियों से सांस्कृतिक जीवन का इतिहास सम्मुख आता है। उष्णता मुख्य क्षेत्रों में धोती,चादर व शाल आदि आरामदेह और स्वस्थ्यवर्धक,पहनावा था, उसे लोग विशेष रूप से पहनते थे। प्रायः स्त्रियाँ कंचुली या चोली पहनती थी। विदेशी सम्पर्क के फलस्वरूप सिले हुए वस्त्रों का अधिक प्रचार हुआ। बहुत प्राचीन काल से पूर्वी भारत, गान्धार, पंजाब में ठण्ड होने के कारण इस प्रकार के वस्त्रों का प्रचलन हुआ। सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी ऐसी अवस्था में हुआ जो स्वाभाविक प्रतीत होता है।[1]

मनुष्य की इच्छा सदैव आकर्षक बनने में रही और यही कारण है, कि चित्रों और मूर्तियों में इस प्रभाव को पाते हैं। उस समय भी ऋतुओं के आधार पर वस्त्रों का चयन होता था। ग्रीष्म में हल्की (ऋतु-संहार) ओढ़नी, बसंत मे केसरिया ओढ़नी साथ ही लाल या केसरिया रंग का स्तन पट्टा। बाहर जाने के समय इस पर उत्तरीय पहनाया जाता था। गुप्तकालीन सिक्कों पर अंकित देवी लक्ष्मी, उत्तरीय पहने हैं। जिससे उनके शरीर का ऊपरी भाग पूर्ण रूप से ढ़का हुआ है। ओढ़नी केवल ऊपरी भाग को ही सौन्दर्य प्रदान नही करती बल्कि नीचे के भाग में बनी सिलवटे भी चित्र और मूर्तियों को सौन्दर्य प्रदान करती है। भारत के मध्य और दक्षिण भाग की मूर्तियाँ अजन्ता, बाघ, साँची व एलोरा आदि

में नारियों को ओढ़नी पहनाई गई है। अधिकतर आकृतियों के ऊपरी भाग को नग्न अंकित किया गया है। वास्तविक जीवन में भी ऐसा ही होता होगा ऐसा अनुमान है। नारी सौन्दर्य को प्रदर्शत करने के लिए कलाकारों ने प्रायः उन्हें निर्वस्त्र चित्रित किया है और उनके आभूषणों द्वारा हुए सौन्दर्य में वृद्धि करने का प्रयास किया है। वक्ष-स्थल की नग्नता को माँ की ममता का प्रतीत माना है। इसलिए कलाकारों ने अपनी कला में उन्हें निर्वस्त्र बनाया है। गले, हाथ और बाहों में अनगिनत आभूषण बनाये हुए हैं।[2] चित्रकला जीवन की मुख्य अभिव्यक्ति रही हैं इसने जीवन के हर पहलू को स्पर्श कर उसे सजाने-सँवारने का महान कार्य किया। हमारे वेद पुराणों में भी चित्रकला की महान भूमिका रही है। सजने-सँवारने की प्राचीन परम्परा हर काल को लुभाती रही है। फिर चाहे वह प्राचीन काल की कला हो, मध्य काल की कला हो या आधुनिक कला की कला हो सभी में चित्रकला की साज-शृंगार की प्राचीन परम्पराओं की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। भारतीय लोक संस्कृति का प्रभाव राजस्थानी चित्रकला एवं पहाड़ी चित्रकला पर भी पड़ा । इसी कारण यहाँ की प्रत्येक चित्र शैली हमारे भारतीय संस्कारों से नहीं बच सकी है। रेखाओं, रंग प्रतीकों से लेकर रीति-रिवाज परम्पराओं को बहुत ही सहज ढंग से अपनाया है। इसलिए राजस्थानी चित्रकला में हमारी भारतीय सस्कृतिक आज भी तरंगति होती हुए दिखाई देती है।[3] ''राजस्थान के चित्रकारों ने नारियों को लगभग 32 प्रकार के परिधानों एवं 27 प्रकार के आभूषणों से सजाया है। परिधानों को रंगों की छटा देने के लिए लगभग 15 प्रकार के वस्त्र एवं 14 प्रकार के आभूषणों से युक्त दिखाया गया है। वेश-भूषा और आभूषणों के चित्रण में सभी शैलियों में जन्म स्थान, काल-क्रम व तत्कालीन परिस्थितियों की झलक साफ दिखाई देती है। यही कारण है, कि हर प्रान्त भारत की संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। चित्र बनाने के तरीकों में भी विषेशकर शैलियों में काफी अन्तर मिलता है।''[4]

राजस्थानी एवं पहाड़ी शैलियों की कला में समय, स्थान, सस्कृति और कलाकारों की भिन्नता होते हुए भी दोनों एक सूत्र में बंधी हैं। दोनों ही शैलियों की कला एक माला है और उसकी अनेक शैलियाँ इसके अलग-अलग मोतियों के समान है। यहाँ की शैलियों में भिन्न-भिन्न वेशभूषा और आभूषणों का चित्रण हुआ है। इस तरह राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली में 'गीत- गोविन्द' काव्य पर आधारित चित्रों में भी वेशभूषा की भिन्नता है। राजस्थान की शैलियों में मेवाड़ शैली के 'गीत-गोविन्द' चित्रों में राधा-कृष्ण की वेशभूषा सुसज्जित अंकित किया गया गया है। पुरुषों को घेरदार जामा, कमर में लम्बा व रंगीन पट्टियों से सज्जा पटका लगाये दिखाया गया है,जिसमें कभी-कभी ज्यामितिक अलंकरण का भी प्रयोग किया गया है। पायजामा, उदयपुरी पगड़ियाँ व जहाँगीर काल की पगड़ियों की तरह बनाई गई है। कानों में मोती,गले में मणियों की माला तथा हाथों में कड़े पहने चित्रित किया गया है। **(चित्र-1)**[5] कृष्ण की वेशभूषा में पीली धोती में लालरंग के जामा पर सुनहरे रंग से गोल-गोल, छोट-छोटे आकारों से अलंकृत किये हैं। यह जामा कृष्ण की कमर से लेकर घुटनों तक पहना गया है। मेवाड़ के जिन चित्रों में कृष्ण धोती पहने हैं, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है, कि घेरदार जामा पहने

हो। कृष्ण को विभिन्न आभूषण पहने चित्रित किया गया, गले में सफेद मोतियों की मालाकण्ठी, कानों में सफेद मोतियों के कुण्डल, पैरों, हाथों में अनेक आभूषणों से युक्त बनाया गया है। कृष्ण के सिर पर रत्न जड़ित अलंकृत मुकुट बनाया गया है। अधिकतर मुकुट को टोप सा बनाकर ऊपर मोर पंख के समान चंदोवे की ओंति के कुछ मुकुट में तीन कोण दिखाई देते हैं। कई चित्रों में कृष्ण के कन्धों पर केसरिया दुपट्टा चित्रित है,तो कई में पारदर्शी सफेद रंग का है। काँगड़ा शैली में कृष्ण को पीली धोती एवं उत्तरीय पहने चित्रित किया गया है। मेवाड़ शैली की तुलना में धोती को आकार में बड़ा दिखाया गया है। मेवाड़ में कृष्ण की लागदार धोती में आगे पट्टी पर सिलवटों को दृश्या गया है, जबकि काँगड़ा शैली में नही दर्शाया गया है। इस शैली के चित्रों में धोती एवं उत्तरीय की किनारों को बारीकी से अलंकृत किया गया है तथा दोनों ही वस्त्र यथार्थ प्रतीत होते हैं। कृष्ण को विभिन्न आभूषणों से सुशोभित किया गया है। सिर पर सुन्दर अलंकृत मोर मुकुट है, जो राजस्थानी शैलियों के कृष्ण के मुकुट से भिन्न है। इस मुकुट में छः कोण है। मुकुट के मध्य मेवाड़ शैली की भाँति समान गोलाई में चन्दवे की आकृति बनी है। मेवाड़ शैली में मुकुट पर चन्दवे की आकृति बड़ी है तथा चन्दवे कम संख्या में है तथा काँगड़ा शैली में अधिक एवं छोटे हैं, जो वास्तविक दृष्टिगत होते हैं। कृष्ण के गले में सफेद मोतियों की माला एवं कण्ठी, कानों में मोतियों के कुण्डल, हाथ एवं पैरों में कड़े आदि चित्रित सफेद रंग का है।

मेवाड़ शैली में राधा और सखियों की वेशभूषा में अलंकारों से युक्त चोली **(चित्र-2)**[6] चोली का रंग चयन ओढ़नी के अनुरूप,सामजस्य के साथ किया गया है। राधा को कसी हुई,ऊँची चोली, जिनमें बाहें भी छोटी दिखाई गयी है तथा गला भी छोटा है। यह लाल, पीले, गुलाबी और हरे रंगों में हैं। ऊपर पारदर्शी ओढ़नी अंकित की गई है। राधा के लहँगे को अधिक अलंकृत कर दिया गया। कशीदाकारी या फूल-पत्तियों के बूटे लहँगों पर छापे गये हैं तथा कहीं-कहीं पर बिन्दी सी रख दी गयी है या फिर केवल आड़ी-तिरछी रेखाएँ ही बना दी गयी है। राधा के लहँगा पर अधिकतर स्वर्ण रंग का प्रयोग है। वस्त्रों के अलंकृत करने की मात्रा से ही आकृति के पद व रूप का अनुमान लग जाता है। सखियों के लहँगा-चुनरी बिल्कुल सादा लहँगे छीटदार व कम अलंकृत किये गये हैं। लहँगों के मध य ओढ़नी का अलग-अलग रंग का पट्टा बना कर चित्रित किया गया। राधा का लहँगा पीला जिस पर लाल व हरे रंग के फूल व पत्तियों से पास-पास घना आलेखन बनाया है। चुनरी व चोली पर भी छोटे-छोटे से फूल बनाये गये हैं। किनारों पर गोटा लगा हुआ है। मेवाड़ शैली में लहँगा कहीं-कहीं छोटा बनाया गया है, ताकि उनके पैरों के आभूषण भी दिखाई दे सके। गर्दन,कमर, भुजाओं, कलाइयों व पैरों में आभूषण बनाये गये हैं। सिर की संधि पर बोरला या शीशफूल जिस पर हीरे, मोती आदि जड़े हुये हैं। नाक में मोतियों की नथ, कानों में झुमके वाले कर्णफूल, जिस पर गोलाई में सफेद मोतियों की लटकन है। गले में हार, कण्ठी व सोने, चाँदी जैसी माला, बाजूबन्ध, हाथों में चूड़ियाँ, बगड़ी, अगुलियों में अँगूठी व पैरों में पायजेब आदि आभूषण से राधा व सखियों का शृंगार किया गया है।

काँगड़ा के ''गीत-गोविन्द'' चित्रों में राधा, सखी एवम् गोपियों की वेशभूषा में राजस्थानी व मुगल प्रभाव अधिक है। **(चित्र-3)**[7] राधा, सखी एवं गोपियों की चोली, लहँगा, चुनरी राजस्थानी शैलियों की तुलना में लम्बाई में अधिक हैं। कई चित्रों में मुगलियाँ वस्त्रों के समान लम्बी आस्तीनदार कुरती भी चित्रित है। वस्त्रों में होने वाली सिलवटों को स्वाभाविक रूप में चित्रित किया गया है। लहंगा व चुनरी की किनारों को अलंकृत किया गया तथा लहरदार रेखाओं फूल-पत्तियों एवं गोल-गोल, छोटे-छोटे बिन्दुओं से सजाया गया है। चुनरी को पारदर्शिक चित्रांकन किया गया। **(चित्र-4)**[8] कहीं-कहीं चित्रों में राजस्थानी वेशभूषा का भी प्रयोग हुआ है। जिसमें मेवाड़ की भाँति लहँगा जिस पर मध्य में चुनरी का पट्टा चित्रित किया गया है।

काँगड़ा शैली में वस्त्रों की सिलवटें मेवाड़ शैली से अधिक दिखाया गया हैं। वस्त्रों में मिश्रित तथा हल्के रंगों का प्रयोग किया गया है। हल्के रंगों के प्रयोग से वस्त्रों में अधिक चमक और कोमलता आ गई है। काँगड़ा शैली के आभूषणों में गले में हार व मोतियों की माला, बाजूबन्द, कर्णफूल, झुमके, सिर पर टीका, पैरों में पायजेब, कलाईयों में चूड़ियाँ व नाक में नथ आदि का प्रयोग किया गया है। बसोहली शैली, काँगड़ा शैली मौलिक रूप से एक होने पर भी दोनों के विकास की स्थितियाँ उन्हें अलग-अलग शैलियों के रूप में प्रतिष्ठित करती है। काँगड़ा और बसोहली शैली की भिन्नता के बावजूद दोनों में कुछ समानताएँ भी है। उदाहरण के लिए दोनों में कोमल और हृदयस्पर्शी भाव है।

काँगड़ा शैली में कारीगरी अधिक है। लेकिन बसोहली में कुछ कम, काँगड़ा शैली अपने पूर्ण विकास को प्राप्त होती हुई है। उसमें नारी-आकृतियाँ बड़ी ही सुन्दर और आकर्षक हैं।[9]

बसोहली शैली के चित्रों की अपनी विषेशताएँ हैं। जिसके कारण इस शैली के चित्रों को राजस्थानी शैलियाँ से भी पृथक किया जा सकता है। **(चित्र-5)**[10] किशनगढ़ शैली में राधा की लाल रंग की चोली पर बेलबूटे डालकर अत्यधिक अलंकृत कर दिया गया। चोली खुली हुई तथा कसी हुई है। घेरदार लहँगा पटका तथा पारदर्शीक ओढ़नी बहुत ही सुन्दर ढंग से ओढ़ी है। इन्हें बेलबूटों से सुसज्जित किया गया है। झीने वस्त्रों की आभा बहुत ही मनमोहक है। आभूषणों में वास्तविकता झलकती है। गले का हार, माथे के आभूषण, भुजबन्द, कानों में कर्णफूल, झूमके, कमर में लटकते मोतियों की करधनी तथा नाक का आभूषण भी अनोखे प्रकार का है। नाक में बेसरि को पहने दर्शाया गया है। हाथों में कंगन आदि आभूषण बड़ी बारीकी से दर्शाया गया है। कृष्ण के वेशभूषा में जामा या पायजामा तथा धोती पहने दर्शाये गये हैं। जामा के साथ कमर में पटका और सिर मुकुट या मोती जड़ित ऊँची पगड़ी जिसमें झब्बा लटका रहता है। वेशभूशा में चटक रंगों का प्रयोग किया गया है तथा अमिश्रित रंगों की प्रधानता है। राजस्थानी शैलियों और बसोहली शैली में 'गीत-गोविन्द' काव्य पर आधारित चित्रों में वेशभूषा चित्रण लगभग मिलता-जूलता है।

लेकिन बसोहली के चित्रकारों का रंग-विधान और सज्जा सर्वथा अपने ढ़ग की है। झीनें वस्त्रों की ओट से अंगों को दिखाने का प्रयास यद्यपि सभी पहाड़ी तथा राजस्थानी शैलियों के चित्रकारों ने किया है, लेकिन बसोहली के कलाकारों में उस ओर विशेष रूप से ध्यान रखा है।[11]

बसोहली शैली में राधा, सखी एवं गोपियों की वेशभूषा में लहँगा राजस्थानी शैलियों की भाँति ही छीटदार व कई सादा है। लेकिन लहँगा के मध्य में ओढ़नी का पट्टा नारी आकृति की नाभि के पास तुरों जैसा निकला हुआ चित्रित है। जिसकी किनारी अलंकृत है, जो कि राजस्थान की शैलियों में नहीं दिखाई देता है।**(चित्र-6)**[12] चोली का गला को V आकार का बनाया गया है। राजस्थानी की शैलियों में चोली के गले का आकार गोल व नीचे में अर्द्धचन्द्रकार रूप में चित्रित किया गया है। चित्र में चोली ऊपर की ओर कसी हुई, छोटी तथा पारदर्शी अलंकृत ओढ़नी पहने हुई है। नारी आकृतियों का सौन्दर्य को द्विगुणित निखारने तथा अधिक ऐन्द्रियक बनाने के लिए विरोधी रंग के वस्त्रों का प्रयोग किया गया है। लाल लहँगा, नीली ओढ़नी,तथा पीली चोली, तो कहीं-कहीं पर केसरिया ओढ़नी, बैंगनी लहँगा एवं लाल रंग की चोली पहने चित्रित है। बसोहली शैली के चित्रकार ने शारीरिक अंगों को दिखाने के लिए केवल ओढ़नी ही पारदर्शी बनाई है।[13]

बसोहली शैली के 'गीत-गोविन्द' चित्रों में नारी-आभूषण राजस्थानी शैलियों की तुलना में भिन्न है। सिर पर सफेद मोतियों से अलकृत शीषफूल तथा ललाट पर चन्द्रकार आकार का माँग टीका, नाक में नथ से छोटी नथुनी, कान में गोल कर्णफूल जिसमें फून्दने लटके हुये हैं। गले में कण्ठहार एवं पान के समान का अलंकृत मंगलसूत्र,सफेद मोतियों की लम्बी युक्त माला,बाजूबन्द, कलाई-बन्द अगुलियों में अँगूठी, पैरों में कड़े पायजेब आदि पहने अंकित हैं। बसोहली शैली के 'गीत-गोविन्द' चित्रों में कृष्ण की वेशभूषा भी राजस्थानी शैलियों में भिन्न है। मेवाड़ शैली में नीलवर्ण कृष्ण को धोती के साथ कमरबन्द व दुपट्टा पहने हुए चित्रित किया गया है। जबकि बसोहली शैली में नही दिखाया गया है। अर्थात अधोवस्त्र पहने अंकन है। इस शैली में कृष्ण की धोती कहीं सादा तो कहीं स्वर्ण रंग की बूँदकियों से अलंकृत है। धोती के किनारे लहरदार गोटेनुमा पट्टे से सुसज्जित है। 'गीत-गोविन्द' के इन चित्रों में कृष्ण के आभूषण भी राजस्थानी चित्र-शैलियों की तुलना में भिन्न है। कृष्ण के मुकुट को सुनहरी कमल की पत्तीयों के समान बनाया गया जिसके बीच-बीच में मणि एवं रत्न सज्जा के रूप में प्रयुक्त हुये हैं। मुकुट में कमल की दो कोपल एवं ऊपर गोल चक्रनुमा मयूर पंख लगे हुये तथा किनारों को सफेद मोतियों से सज्जाया गया है। कृष्ण के गले में सफेद पुष्पों की लम्बी माला तथा कमर तक मोतियों की माला एवं कण्ठी मुक्तावली हार जो रत्नों से सज्जित है। कन्धों पर अलंकृत फुंदने, कानों में सफेद मोतियों की कर्ण बाली, भुजाओं में भुजबन्द, कलाई में स्वर्ण गोल कड़े जैसा आभूषण, कमर में रत्न जड़ित कटिभूषण तथा पैरों में कड़ा आदि आभूषण चित्रित है। बसोहली शैली में नारी-पुरुषों के आभूषण चित्रित करने में नगीनों के स्थान पर तितली और सोनकिरवा (स्वर्ण-कीट) के पंखों के हरे, लाल, सुनहरी भागों को चिपकाया गया है। भारतीय चित्रकला में ऐसा प्रयोग पूर्णतया अनुपम है।

चित्रों के विश्लेषण एवं शैलीगत आधार पर कह सकते हैं, कि राजस्थानी एवं पहाड़ी शैली में क्षेत्रीयता के आधार पर समयानुसार नारी एवं पुरुषोंतियों की वेशभूषा का चित्रांकन भिन्न स्वरूपों में किया गया है। जिन पर समय-समय पर अनेक आलेखन भी बनाये गये हैं। जैसे -जैसे वस्त्र-उद्योग विकसित होता रहा वैसे-वैसे उत्कृष्ट वस्त्रों का निर्माण किया जाने लगा और चित्रों में भी वस्त्रों का अंकन समयानुरूप परिवर्तित होता गया। क्योंकि चित्रकार जिस परिवेश का अनुभव करता है, उसी का ही अंकन करता है। चित्रों के द्वारा ही तत्कालीन समाज में प्रचलित वेशभूषा व वस्त्र उद्योग की उन्नति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]शशि झा. : *भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला में नारी का स्वरूप,* मेरठ, 1992, पृष्ठ 15

[2]शशि झा.: *भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला में नारी का स्वरूप,* 1992, मेरठ, पृष्ठ 76

[3]शुक्ला अन्नपूर्णा : *किशनगढ़ चित्र शैली,* जयुपर, 2007, पृष्ठ 45

[4]सिंह सुषमा : *राजस्थानी चित्र शैली में आखेट दृश्य,* बिजनौर, (उ.प्र.) 2013, पृष्ठ 83-84

[5]चित्र 1 : वात्स्यायन, कपिला : *मेवाड़ गीत-गोविन्द,* नई दिल्ली, पृष्ठ 46

[6]चित्र 2 : वात्स्यायन, कपिला : *मेवाड़ गीत-गोविन्द,* नई दिल्ली, पृष्ठ 63

[7]चित्र 3 : शर्मा, के.एल. : *गीतगोविन्दम्,* हरदा (एम. पी.)2014, चित्र पृष्ठ 4

[8]चित्र 4 : रणधावा एम.एस., : *काँगड़ा पेन्टिग ऑफ द गीत गोविन्द,* नई दिल्ली, पृष्ठ 75

[9]गैरोला वाचस्पतिः *भारतीय चित्रकला,* 1990, दिल्ली, पृष्ठ 201-202

[10]चित्र 5 : शुक्ला अन्नपूर्णा : *किशनगढ़ चित्र शैली,* जयुपर, 2007, पृष्ठ 104

[11]गैरोला वाचस्पति : *भारतीय चित्रकला,* 1990, दिल्ली, पृष्ठ 300

[12]चित्र 6 : शर्मा, के.एल. : *गीतगोविन्दम्,* 2014, हरदा (एम. पी.) चित्र पृष्ठ 6

[13]टन्डन आर.एन. : *भारतीय चित्रकला की रूप रेखा,* 1962, मेरठ, पृष्ठ 62

चित्र सूची

चित्र संख्या 1: सखी द्वारा राधा को बसन्त ऋतु के आगमन के बारे में बताती हुई, गीत-गोविन्द, मेवाड़ शैली, 1700 ई.

चित्र संख्या 2 : वसन्त ऋतु में कुंज में गोपियों के साथ नृत्य करते हुए कृष्ण, गीत-गोविन्द, मेवाड़ शैली , 1700 ई.

चित्र संख्या 3 : वसन्त ऋतु में कुंज में कृष्ण गोपियों के साथ नृत्य करते हुए, गीत-गोविन्द, काँगड़ा शैली, 1760 ई°

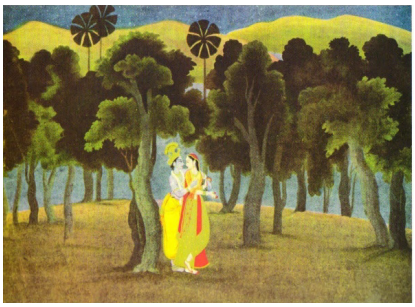

चित्र संख्या 4: कृष्ण का प्रेम का शुभारंभ गीत-गोविन्द कांगडा शैला, 1700 ई.

चित्र संख्या 5: कृष्ण गोपियों के साथ नृत्य करते हुए, गीत-गोविन्द, किशनगढ़, 1770 ई°

चित्र संख्या 6: कृष्ण की शोभा का वर्णन करती हुई सखी से राधा गीत-गोविन्द,बसोहली शैली, 1730 ई.